CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक व्यवहार का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय,
केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर
Email-dharmendrabassi@rediffmail.com, Mobile-9460242811

First draft received: 12.10.2023, Reviewed: 16.10.2023, Accepted: 14.11.2023, Final proof received: 28.12.2023

सार-संक्षेप

वर्तमान में राज्य सरकार एवं विभिन्न सामाजिक संस्थाओं द्वारा विद्यालय संचालित किये जा रहे हैं। वे अपनी विचार धाराओं, अपने लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को लेकर चलते है इनमें समानताएँ भी है और असमानताऐं भी। क्योंकि यह सभी विद्यालय अपने सांस्कृतिक विचारों को प्राथमिकता देते है सभी विद्यालयों में विद्यार्थियों को जो शिक्षा दी जाती है। उसमें सामाजिक व्यवहार की शिक्षा दी जा रही है या नहीं यह एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। साथ ही विद्यार्थी का समायोजन कैसा है तथा विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनके समायोजन पर क्या प्रभाव पड़ता है? आदि का अध्ययन करने हेतु ही प्रस्तुत शोध कार्य का निरूपन किया। प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करना। माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना। प्रस्तुत शोध कार्य सर्वेक्षण विधि द्वारा पूर्ण किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श के रूप में माध्यमिक स्तर के 120 विद्यार्थियों को सौद्देश्य न्यादर्श विधि से चयन किया गया। जिसमें 60 छात्र एवं 60 छात्राएँ हैं। दत्त संकलन हेतु दो मानकीकृत उपकरणों– (1) सामाजिक व्यवहार मापनी एवं (2) समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया। दत्तों के विश्लेषण हेतु शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया एवं सांख्यिकी पद्धतियों के रूप में मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण एवं सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण के पश्चात् निष्कर्ष प्राप्त हुए कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन के मध्य ऋणात्मक किन्तु नगण्य प्रभाव पाया गया।

मुख्य शब्द : *सामाजिक व्यवहार, समायोजन आदि.*

प्रस्तावना

वर्तमान युग में शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर प्रगति एवं विकास हो रहा है। यह अति हर्ष का विषय है क्योंकि मानव कल्याण इसी में निहित है। वर्तमान युग में जहाँ एक ओर आधुनिक तकनीकों का प्रयोग कर इसे और अधिक व्यवहारिक रूप दिया जा रहा है। शिक्षा को अधिकाधिक वैज्ञानिक रूप प्रदान करने का सतत प्रयास जारी है। जिसमें अपेक्षित सफलता भी हासिल हो रही है। मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण निरन्तर सृजनशील बना रहता है और अपनी जिज्ञासा को शान्त करता रहता है। आज हमारे देश में शिक्षा का उत्तरोतर विकास हुआ है परन्तु खेद का विषय है कि आज हमारे समाज में सामाजिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है तथा मानव जीवन सस्ता हो रहा है। समाज में निरन्तर अपराधिक तत्वों में बढ़ोतरी हो रही है। वर्तमान में होते इस सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक पतन के कारण शिक्षा का क्षेत्र भी पर्याप्त प्रभावित हो रहा है।

समाज में रहकर मनुष्य स्वयं का सामंजस्यपूर्ण विकास कर सकता है। मनुष्य का समाज के अन्य व्यक्तियों के प्रति, परिवार के सदस्यों के प्रति प्रदर्शित आचरण सामाजिक व्यवहार होता है। सामाजिक व्यवहार का निर्धारण समाज, परिवार एवं विद्यालय करता है। जन्म लेते ही बालक को अपने भौतिक वातावरण के साथ अनुकूलन करना पड़ता है। जीवन के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए समायोजन आवश्यक है।

अतः प्रस्तुत शोध के माध्यम से 'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक व्यवहार का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव' का अध्ययन करने का निश्चय किया है।

अध्ययन का औचित्य

वर्तमान में राज्य सरकार एवं विभिन्न सामाजिक संस्थाओं द्वारा विद्यालय संचालित किये जा रहे हैं। वे अपनी विचार धाराओं, अपने लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को लेकर चलते है इनमें समानताएँ भी है और असमानताऐं भी। क्योंकि यह सभी विद्यालय अपने सांस्कृतिक विचारों को प्राथमिकता देते है सभी विद्यालयों में विद्यार्थियों को जो शिक्षा दी जाती है। उसमें सामाजिक व्यवहार की शिक्षा दी जा रही है या नहीं यह एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। साथ ही विद्यार्थी का समायोजन कैसा है तथा विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनके समायोजन पर क्या प्रभाव पड़ता है? आदि का अध्ययन करने हेतु ही प्रस्तुत शोध कार्य का निरूपन किया।

शोध के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

2. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनके समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सौद्देश्य न्यादर्श विधि द्वारा राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के कक्षा–10 में अध्ययनरत सरकारी एवं निजी विद्यालयों के 120 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना गया है।

चर

1. स्वतंत्र चर– सामाजिक व्यवहार

2. आश्रित चर– समायोजन

उपकरण

प्रस्तुत शोध को पूर्ण करने हेतु शोधार्थी द्वारा निम्नांकित उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

(1) **विद्यार्थी सामाजिक व्यवहार मापनी–** डॉ. अशोक कुमार शर्मा द्वारा निर्मित सामाजिक व्यवहार मापनी का प्रयोग किया गया है।

(2) **समायोजन मापनी (A.I.S.S.)–** डॉ. ए. के. पी सिन्हा एवं डॉ. आर. पी सिंह द्वारा निर्मित समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध हेतु सांख्यिकी के रूप में मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण एवं सहसम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

परिकल्पना 1– माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या– 1

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण	स्वीकृत/अस्वीकृत
सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	60	103.08	5.14	2.28	0.01 स्तर पर स्वीकृत
निजी विद्यालय के विद्यार्थी	60	100.60	6.69		

0.05 सार्थकता स्तर = 1.98
स्वतंत्रता के अंश = 118

0.01 सार्थकता स्तर = 2.62

तालिका संख्या 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का मध्यमान 103.08 एवं मानक विचलन 5.14 है तथा माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का मध्यमान 100.60 एवं मानक विचलन 6.69 है तथा स्वतंत्रता के अंश 118 पर टी का मान 2.28 प्राप्त हुआ। जो 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 2.62 से कम है। अतः परिकल्पना "माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है" 0.01 स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 2– माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या– 2

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण	स्वीकृत/अस्वीकृत
सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	60	7.32	2.63	0.74	दोनों स्तर पर स्वीकृत
निजी विद्यालय के विद्यार्थी	60	7.00	2.00		

0.05 सार्थकता स्तर = 1.98
स्वतंत्रता के अंश = 118

0.01 सार्थकता स्तर = 2.62

तालिका संख्या 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन का मध्यमान 7.32 एवं मानक विचलन 2.63 है तथा माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन का मध्यमान 7.00 एवं मानक विचलन 2.00 है तथा स्वतंत्रता के अंश 118 पर टी का मान 0.74 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान 1.98 एवं 2.62 से कम है। अतः परिकल्पना "माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है" दोनों स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 3– माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनके समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

तालिका संख्या– 3

समूह	संख्या	सह–सम्बन्ध गुणांक	सह–सम्बन्ध का स्तर
माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन के मध्य में सहसम्बन्ध	120	–0.02	नगण्य ऋणात्मक सह–सम्बन्ध

तालिका संख्या 3 के अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन के मध्य में सहसम्बन्ध गुणांक का मान –0.02 प्राप्त हुआ है जो कि ऋणात्मक नगण्य सह–सम्बन्ध है। अतः यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन के मध्य ऋणात्मक किन्तु नगण्य प्रभाव पाया जाता है।

निष्कर्ष

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

2. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन के मध्य ऋणात्मक किन्तु नगण्य प्रभाव पाया गया।

सन्दर्भ

- ब्राडवे, के. पी. (1999) : द सोशल कम्पीटेंस ऑफ एडोलसेन्स चिल्ड्रन, नई दिल्ली, हारानन्द पलब्किेशन।
- भार्गव, महेश (1993) : ''आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन'' द्वितीय संस्करण, आगरा, भार्गव बुक हाऊस।
- भार्गव, ऊषा (1993) : ''किशोर मनोविज्ञान'', जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- कपिल, एच. के. (1975) : सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
- शर्मा, वीरेन्द्र प्रकाश (2000) : सामाजिक अन्वेषण की पद्धतियाँ, जयपुर, पंचशील प्रकाशन।

महात्मा गाँधी जी कहा करते थे की शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास से है अर्थात् गांधीजी ने शिक्षा को सर्वांगीण विकास का आधार बताया है। उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी शिक्षण संस्थानों का पाठ्यक्रम तो समान होता है किन्तु उनकी शिक्षण प्रक्रिया, शिक्षा के स्तर, उपलब्ध अध्ययन संसाधनों में भिन्नता देखने को मिलती है। चूंकि सरकारी शिक्षण संस्थानों में छात्रों से मासिक शुल्क नहीं लिया जाता है। शिक्षकों का व्यय भी सरकार ही वहन करती है। मात्र प्रवेश शुल्क ही सरकारी शिक्षण संस्थाओं में ज्ञानार्जन हेतु लिया जाता है जबकि निजी शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थी मासिक शुल्क अदा करते है। अतः उच्च आर्थिक स्तर के विद्यार्थी निजी विद्यालयों में ज्ञानार्जन हेतु प्रवेश लेते है। विज्ञान व तकनीकी का प्रभाव इन शिक्षण संस्थानों में देखने को मिलता है। नवीनता एवं प्रभाव का निजी शिक्षण संस्थानों में स्पष्टता झलकती है। जबकि सरकारी शिक्षण संस्थाओं में न तो पाठ्यक्रम को पूरा कराने का प्रयत्न किया जाता है और न छात्र उपस्थिति प्रशंसनीय रहती है और न ही अनुशासित वातावरण दिखलाई देता है।

निजी शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा का स्तर उच्च होने का कारण कही ना कही संस्थान में उपलब्ध अध्ययन संसाधन है। अध्ययन संसाधन वे माध्यम होते है जो

शिक्षा को विद्यार्थी से जोड़ते है। अध्ययन संसाधन ऐसे सहायक साधन है, जो अध्ययन की जटिलता को कम करते है, विद्यार्थी की कठिनाईयों का निवारण करते है, शिक्षण पद्धति में सुधार लाते है तथा अध्ययन हेतु अनुकूल वातावरण तैयार करते है, यातायात सुविधा, पुस्तकालय, शैक्षिक पत्र–पत्रिकाएं, फर्नीचर जल की उचित व्यवस्था, बिजली की समुचित व्यवस्था, सामान्य कक्ष, वाचनालय, अध्यापकों की आवश्यकतानुसार संख्या, खेल का मैदान, उचित समय सारणी, कम्प्यूटर, ओवर हैड प्रोजेक्टर, फोटो स्टेट मशीन, श्यामपट्ट, कक्षा–कक्ष इत्यादि अध्ययन संसाधन के अन्तर्गत आते है। ये सभी अच्छे संस्थान की आधारशीला कहलाते है। सरकारी व निजी संस्थानों में इन संसाधनों की उपलब्धता का उनकी शैक्षिक गुणवता में अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। अतः सरकार द्वारा सरकारी विद्यालयों में इन अध्ययन संसाधनों की संख्या गुणवत्ता स्तर इत्यादि को बढ़ने का प्रयत्न किया जा रहा है।, ताकि सरकारी विद्यालयों में भी निजी विद्यालयों की भांति शिक्षा का उच्च स्तर प्राप्त हो सके और इस क्षेत्र में सकारात्मक प्रभाव देखने को मिल रहा है। सरकारी शिक्षण संस्थाओं में भी निजी शिक्षण संस्था की भांति अध्ययन संसाधनों की वृद्धि की जा रही है।

समस्या का कथन

"झुंझुनू जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी शिक्षण संस्था में अध्ययन संसाधनों का तुलनात्मक अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य

• सरकारी व निजी शिक्षण संस्थाओं में अध्ययन संसाधनों की उपयोगिता को ज्ञात करना।

अध्ययन की परिकल्पना

• सरकारी व निजी शिक्षण संस्थानों के अध्ययन संसाधन की उपयोगिता में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि–"झुंझुनू जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी शिक्षण संस्था में अध्ययन संसाधनों का तुलनात्मक अध्ययन" शोधार्थी ने अनुसन्धान की विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

न्यादर्श

सारणी

विधार्थी	शहरी		ग्रामीण	
	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा
60	15	15	15	15

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. सरकारी व निजी शिक्षण संस्थानों के अध्ययन संसाधन की उपयोगिता में सार्थक अन्तर नहीं है।

उपकरण	उपकरणों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	सह सम्बन्ध	टी परिक्षण
राजकीय विद्यालयों के उपकरण	30	21.544	7.91	0.634	1.61
निजी विद्यालयों के उपकरण	30	23.183	7.58		

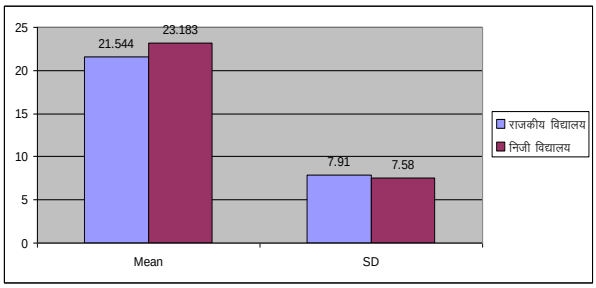

उपर्युक्त तालिका संख्या 1 में उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी शिक्षण संस्था में अध्ययन संसाधनों के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को प्रदर्शित किया गया। इनके मध्यमान क्रमशः 21.544 एवं 23.183 प्राप्त हुए तथा मानक विचलन क्रमशः 7.91 एवं 7.58 प्राप्त हुए हैं। मध्यमानों एवं मानक विचलनों की गणना के आधार पर टी–मूल्य (T.Value) 1.61 प्राप्त हुआ है। दोनो विद्यालयों में अध्ययन संसाधनों की स्थिति का सहसम्बन्ध 0.634 है। अतः दोनो ही प्रकार के विद्यालयों में मध्यमान माध्य विचलन इत्यादी में अन्तर है। इस अन्तर की सार्थकता की जाँच हेतू टी परिक्षण किया गया है। टी परिक्षण का मान 1.61 प्राप्त हुआ। अतः परिकल्पना प्रथम स्वीकृत हुई और अध्ययन संसाधनों की उपलब्धता में सार्थक अन्तर है।

अध्ययन का परिसीमन

• शिक्षण संस्थाओं के रूप में विद्यालय को ही चुना गया है।

• झुंझुनू जिले में अनेकानेक विद्यालय है किन्तु अध्ययनार्थ एक सरकारी विद्यालय व एक निजी विद्यालय को ही चुना गया है।

• प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत प्रश्नावली के माध्यम से ज्ञात विद्यार्थी के विचारों एवं अवलोकन प्रपत्र को प्रदत्त संकलन के उपकरण के रूप में लिया गया है।

शोध के शैक्षिक फलितार्थ

शोध अध्ययन के प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर शोध के शैक्षिक फलितार्थ निम्न प्रकार है–

विभिन्न प्रकार के शिक्षण संस्थानों या विद्यालयों में अध्ययन संसाधनों की उपलब्धता में अन्तर होता है। जिन शिक्षण संस्थाओं में अध्ययन संसाधन की उपलब्धता कम है, उनमें और अधिक अध्ययन संसाधन उपलब्ध कराये जा सकते है। तकनीकी अध्ययन संसाधनों का प्रयोग अधिकाधिक रूप में शिक्षण संस्थाओं में किया जा सकता है। जिससे शिक्षा की गुणवता में वृद्धि हो सके।

अध्ययन संसाधनों की उपयोगिता, शिक्षण संस्थाओं में स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती है। वैज्ञानिकता व तकनीकी के प्रयोग द्वारा अध्ययन संसाधन शिक्षा जगत में अत्यधिक उपयोगी होते हैं। उनका प्रयोग शिक्षण के दौरान अधिक किया जाना चाहिए। ऐसे अध्ययन संसाधनों का प्रयोग अधिकाधिक किया जाना चाहिए। जिससे कम समय में अधिक विद्यार्थियों को लाभ पहुंचे। अध्ययन संसाधनों की स्थिति में भी अपेक्षाकृत सुधार किया जाना चाहिए। अध्ययन संसाधनों की स्थिति के विषय में संस्था प्रधान को गम्भीर होना चाहिए।

सरकारी शिक्षण संस्थाओं में भी सरकार द्वारा अध्ययन संसाधनों के उपरोत्तर वर्धन व उपलब्धता का प्रयास किया जाना चाहिए। निजी शिक्षण संस्थाओं द्वारा भी अध्ययन संसाधनों को विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

शोध का निष्कर्ष

1. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का शिक्षण संस्थान में उपलब्ध अध्ययन संसाधनों के प्रथम क्षेत्र पुस्तकालय तथा वाचनालय सुविधाएं प्रति अभिमत सकारात्मक है।

2. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का शिक्षण संस्थान में उपलब्ध अध्ययन संसाधनों के द्वितीय क्षेत्र भौतिक सुविधाएं प्रति अभिमत सकारात्मक है।

3. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का शिक्षण संस्थान में उपलब्ध अध्ययन संसाधनों के तृतीय क्षेत्र शिक्षकों तथा शिक्षण सुविधाएं प्रति अभिमत सकारात्मक है।

4. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का शिक्षण संस्थान में उपलब्ध अध्ययन संसाधनों के चतुर्थ क्षेत्र खेलकूद सम्बन्धी सुविधाएं प्रति अभिमत सकारात्मक है।

5. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का शिक्षण संस्थान में उपलब्ध अध्ययन संसाधनों के पंचम क्षेत्र तकनीकी सुविधाएं प्रति अभिमत सकारात्मक है।

6. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का शिक्षण संस्थान में उपलब्ध अध्ययन संसाधनों के षष्ठ क्षेत्र अध्ययन संसाधन अर्थ तथा सुविधाएं प्रति अभिमत सकारात्मक है।

7. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं का शिक्षण संस्थान में उपलब्ध अध्ययन संसाधनों के प्रथम क्षेत्र पुस्तकालय तथा वाचनालय सुविधाएं प्रति अभिमत सकारात्मक है।

8. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं का शिक्षण संस्थान में उपलब्ध अध्ययन संसाधनों के द्वितीय क्षेत्र भौतिक सुविधाएं प्रति अभिमत सकारात्मक है।

9. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं का शिक्षण संस्थान में उपलब्ध अध्ययन संसाधनों के तृतीय क्षेत्र शिक्षकों तथा शिक्षण सुविधाएं प्रति अभिमत सकारात्मक है।

10. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं का शिक्षण संस्थान में उपलब्ध अध्ययन संसाधनों के चतुर्थ क्षेत्र खेलकूद सम्बन्धी सुविधाएं प्रति अभिमत सकारात्मक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- कोठारी, सी. आई. : रिसर्च मैथडोलॉजी मैथड एण्ड टैक्निक्स, न्यू देहली, द्वितीय प्रकाशन 2005
- ढौडियाल, सच्चिदानन्द : शैक्षिक अनुसन्धान का विधिशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, चतुर्थ संस्करण 2006
- धुल, इन्द्रा : मार्डन हैण्डस इन इण्डियन एजूकेशन, संजय प्रकाश, पांचवा संस्करण 2007
- भार्गव, लक्ष्मी: शिक्षण तकनीकी, विजय प्रकाशन मन्दिर वाराणसी, संस्करण 2005
- भारद्वाज, दिनेश चन्द्र : भारतीय समाज में शिक्षा एवं शिक्षक की भूमिका, राधा प्रकाशन मन्दिर, चोईसवां संस्करण 2005–06
- मंगल, एस. के. : ऑडियो विज्युअल एज्यूकेशन, आर्य बुक डिपों, पांचवा संस्करण 2005
- मिश्रा, मंजू : शैक्षिक तकनीकी आवश्यकता एवं प्रबन्धन, यूनिवर्सिटी बुक हाउस प्रा. लिमिटेड, प्रथम संस्करण 2007
- मुखर्जी, रविन्द्र नाथ : सामाजिक शोध व सांख्यिकी, तिलक कॉलोनी सुभाष नगर, बरेली, पंचम संस्करण 2001
- सुखिया और महरोत्रा : शैक्षिक अनुसन्धान के मूल तत्व, साहित्य प्रकाशन, आगरा, संस्करण 2005
- शर्मा, आर.ए.: शैक्षिक प्रौद्योगिक के मूल आधार, साहित्य प्रकाशन, आगरा संस्करण 2007
- शर्मा, बी.एल.: यू.जी.सी. शिक्षा शास्त्र, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, संस्करण 2008
- सिंह, अरूण कुमार : शैक्षिक प्रबन्ध एवं विद्यालय संगठन, श्री कविता प्रकाशन, संस्करण 2006